भारतीय मजदूर संघ

के

७वें अ० भा० अधिवेशन

के अवसर पर

हैदराबाद

में

दि० १० व ११ जनवरी, ८४ के दिन

प्रतिनिधियों

को

मार्गदर्शन

—दत्तोपन्त ठेंगड़ी

ध्येय के प्रति सम्पूर्ण समर्पण

आज सुबह से जो कार्यक्रम हो रहा है, उसका ही यह एक हिस्सा है। आप सबको यह अनुभव होता होगा कि कल का वायुमण्डल अलग था और आज का वायुमण्डल कुछ अलग है। केवल इसलिये नहीं कि कल हम खड़े होकर बोल रहे थे, आज बैठकर बोल रहे हैं, केवल इतनी ही बात नहीं है। वैसे भी कल का और आज के विषय में कुछ अन्तर है, यह सबको ध्यान में आया होगा। आप में से बहुत लोगों ने नाटक आदि देखे होंगे, उसमें कुछ एक्टर्स रहते हैं, नाटक में काम करने वाले, दूसरे एक्टिंग नहीं करते लेकिन उनकी भी आवश्यकता रहती है। एक रहता है स्टेज और दूसरा रहता है ग्रीनरूम—वह रूम जहां मेकअप आदि किया जाता है। वहां ड्रेस आदि पहना जाता है और मेकअप किया जाता है। स्टेज पर आने वाला एक्टर उतना ही सज्जन है। लेकिन स्टेज पर आने पर उसका रोल अलग रहता है, जहां कोई राजा बनता है तो कोई नौकर बनता है। कोई नायक बनता है, कोई खलनायक बनता है। एक दूसरे से झगड़ते भी हैं, तभी जाकर नाटक जैसा चाहिए वैसा हो पाता है। लेकिन जब सारे एक्टर्स ग्रीनरूम में चले जाते हैं, जहां सारा मेकअप आदि छोड़ना है, तो वहां राजा राजापन भूल जाता है, नौकर नौकरपन भूल जाता है। नायक नायकपन भूल जाता है, खलनायक खलनायकपन भूल जाता है। वहां पर सारे एक हैं, इस नाते बातचीत करते हैं। वैसे ही कल का एक अलग एक्शन था। कोई डायस पर बैठा होगा। कोई नीचे खड़ा होगा। कोई नारे लगा रहा होगा, कोई बीच में बैठा होगा, लेकिन स्टेज से बाहर आते ही, अन्दर ग्रीनलैण्ड में जाते ही, वहां कोई राजा नहीं है, खलनायक नहीं है, कोई नौकर नहीं है, हम सब एक परिवार के हैं और इस दृष्टि से पारिवारिक कार्य समझ कर ही यहां बैठकर, अभी मैं बोलने जा रहा हूं। भाषण देने नहीं जा रहा हूं, भाषण में तो जोशखरोश की भी बात हो जाती है, किन्तु अपने परिवार के लोगों से मैं अपने दिल की बात पेश करने जा रहा हूं। इतना ही आप समझें। इसको कोई भाषण समझने की आवश्यकता नहीं है। भाषण आदि सारा मामला कल खतम हो गया, अब यह अपनी घरेलू बात है।

सारा फंक्शन खत्म करके मैं वापिस आया, तब हमारे कुछ मित्र मिले । वे भारतीय मजदूर संघ में नहीं हैं, अन्य क्षेत्र में काम कर रहे हैं । जब चाय पी रहे थे, तब बात चली । उन्होंने कहा कि 'ठेंगड़ी जी, आपको बड़ी प्रसन्नता होती होगी' हमने कहा 'भाई, काहे के लिए, हम तो हमेशा प्रसन्न ही रहते हैं । आपने हमको मायूस कब देखा ? जैसा कि कुछ लोगों के बारे में कहते हैं, 'काजी दुबले क्यों— दुनिया के अन्देशे से' ऐसी तो हमारी हालत नहीं है; हम तो खुश रहते ही हैं ।' बोले, 'यह बात नहीं — भारतीय मजदूर संघ की ताकत बढ़ रही है, इसके कारण आपको आनन्द हो रहा होगा ।' हमने कहा कि 'भाई, ताकत बढ़ रही है या नहीं और यदि बढ़ी तो इसका आपको अन्दाजा कैसे हो गया है ?' उन्होंने कहा कि 'यह तो सरकार ने भी घोषित किया है कि आप क्रमांक दो पर हैं ।' हमने कहा कि 'अब तक सरकार ने घोषित नहीं किया था, इसके कारण कहीं सरकार के सर्टिफिकेट के भरोसे हम काम कर रहे थे क्या ? मानो सरकार ने कल यदि कोई राजनैतिक डिसीशन लेकर घोषित किया कि भारतीय मजदूर संघ नाम की संस्था ही हमारी लिस्ट में नहीं है, तो क्या हम खतम हो जायेंगे ? हम हैं या नहीं, हम छोटे हैं या बड़े हैं, ताकतवर हैं या ताकतवर नहीं हैं, भारत सरकार जो हमेशा झूठ बोलने वाली है, वह हमारे बारे में क्या बोलती है या क्या नहीं बोलती है ? इससे हमारी ताकत घटती है क्या ?' वे बोले, 'नहीं-नहीं, यह तो मैंने यूं ही कह दिया ।' हमने कहा कि 'भाई सरकार ने कहा है इसके कारण तो वह बात गलत होने की ही संभावना ज्यादा दिखती है, उसके कारण तो हमें आनन्द नहीं हो सकता ।' वे बोले, 'जरा संख्या आदि भी आपकी बढ़ी है । 21 लाख तक संख्या गई है, जनरल सेक्रेटरी की रिपोर्ट में आपने भी पढ़ा होगा ।'

बात ऐसी थी कि ये हमारे मित्र राजनैतिक क्षेत्र में काम करने वाले हैं और राजनैतिक क्षेत्र में शक्ति का एक मात्र मापदण्ड है --संख्या । डेमोक्रेसी है इसलिए सब बातें केवल संख्या के आधार पर आंकी जाती हैं । सबसे बड़ी बात यह है कि वहां पर चुनाव को मानते हैं और चुनाव से ज्यादा कुछ है नहीं । अब डेमोक्रेसी नाम की जो चीज है, लोकतंत्र नाम की जो चीज है, वह समानता इस विषय में रखती है कि सबके समान वोट हैं । गामा गूमा पहलवान उसके भी एक वोट, सिकिया पहलवान उसका भी एक वोट । डेमोक्रेसी तो चल रही है, लेकिन और कुछ चल रहा है क्या ? जिसके-जिसके मुँह पर मूछ है और जिसने 21 साल पूरे किये हैं, उसे एक वोट, बिलकुल समानता है । गामा गूमा को एक वोट, टी० वी० के मरीज को एक वोट । रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे विद्वान, कला-प्रिय को एक वोट और खून-खराबी करने वाले को भी एक वोट । डेमोक्रेसी में विद्वत्ता आदि का स्थान नहीं है । डा० राधाकृष्णन को भी एक वोट और 21 बार मैट्रिक फेल वाले को भी एक वोट । 21 साल का हो गया है तो बुद्धि और

विद्वत्ता की बात हम नहीं देखते । समानता है– डेमोक्रेसी में और उसके कारण राजनैतिक क्षेत्र में समझा जाता है कि भाई, बाकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। ज्यादा वोट आपके पास आ जायेंगे तो आप बलवान हो गये । इसी आधार को ट्रेड यूनियन्स के क्षेत्र पर लागू किया जाता है और कहा जाता है कि आपकी संख्या 21 लाख हो गई, तो आपकी ताकत बढ़ गई है। संख्या बढ़ गई तो शक्ति बढ़ गई है। इस प्रकार मोटा हिसाब लगाया जाता है कि भारतीय मजदूर संघ बढ़ रहा है। वास्तव में शक्ति का मापदण्ड क्या है ? जरा सोचने की बात है । संख्या शरीर की तरह है, कोई दुबला-पतला होता है तो कोई मोटा होता है। शरीर का मोटापन दोनों तरह से हो सकता है। एक आदमी अखाड़े में जाता है, दण्ड बैठक, व्यायाम करता है, मेहनत के कारण उसका शरीर तगड़ा हो जाता है। वह एक प्रकार का मोटापन होता है । दूसरा मोटापन है कुछ करता ही नहीं। मेहनत नहीं करता, हमेशा गद्दी पर बैठा रहता है, इसके कारण चर्बी बढ़ जाती है। चर्बी के कारण वह इतना मोटा हो जाता है कि उसका उठना-बैठना भी मुश्किल होता है । मोटापा को ताकत मान लिया जाय तो अखाड़े में मेहनत करने वाले पहलवान का एक तरह का और बिस्तर पर बैठे हुए चर्बी का मोटापा दूसरे ढंग का है। दोनों को क्या हम समान समझें ? क्या ये दोनों ताकतवर हैं ? अतः मोटापा शक्ति का मापदण्ड नहीं हो सकता। संख्या की भी यही स्थिति है। संख्या बड़ी है, किन्तु वह ताकत की मापदण्ड नहीं हो सकती। दुनिया के इतिहास को हम देखें। जिन्होंने इतिहास में परिवर्तन किया है, घटनाचक्र बदल दिया है, बड़ी-बड़ी क्रान्तियां की हैं, उन लोगों के द्वारा शुरू करते समय मेजारिटी ऑफ पिपुल नहीं दिखाई दिया। कोई बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन दुनिया के अन्दर ऐसा नहीं हुआ, जिस परिवर्तन का प्रारम्भ करते समय सारी मेजारिटी उसके साथ थी। ऐसा कभी नहीं हुआ है-- हम देख सकते हैं ।

महात्माजी से किसी ने एक प्रश्न पूछा था। महात्मा जी ने उसके जवाब में प्रतिप्रश्न किया । प्रश्न करने वाले जवान जर्नलिस्ट से महात्मा जी ने पूछा— 'ये बताओ तुमने कभी जूलियस सीजर का नाम सुना है ?' उसने कहा, 'हां, सुना है ।' कौन था ? तो रोम का अघोषित बादशाह था। सारे रोमन साम्राज्य पर उसकी हुकूमत चलती थी । उस समय रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत आने वाले सभी उसके फालोअर्स थे। और आगे बोले— तुमने जीसस क्राईस्ट का नाम सुना है ? बोले हां सुना है। क्या था ? उसके कितने फालोअर्स थे ? बारह फालोअर्स । जूलियस सीजर के लाखों फालोअर्स थे, जीसस क्राईस्ट के बारह फालोअर्स । बारह में से एक ने गद्दारी की, जिसका नाम जुडास था और बचे हुए ग्यारह में से एक ने तीन बार पहचानने के लिए सामने आने पर इतना ही

कहा कि मैं जीसस को पहचानता हूं। याने बारह लोग थे, एक ने गद्दारी की और एक ने मात्र इतना कहा—मैं जीसस को पहचानता हूं। तो रहे दस। लाखों फालोअर्स थे जूलियस सीज़र के, किन्तु आज उसके दुनिया में कितने फालोअर्स हैं? गांधी जी ने पूछा। तो केवल संख्या मापदण्ड नहीं हो सकती, और भी कुछ मापदण्ड होगा। यह बात हमारे ख्याल में आ सकती है। बड़ा काम शुरू करते समय मात्र संख्या बराबर नहीं है तो और कुछ बात है। एक ईसाई सन्त हो गए हैं। जीसस ने उनको कहा दुनिया का नक्शा बदलना है, आपको कितने लोगों की आवश्यकता है? उन्होंने कहा–गिव मी टुवेल्व ओनली। मुझे केवल बारह आदमी दीजिए। मैं दुनिया को बदल दूंगा। आज के कोई राजनैतिक नेता होते तो कहते कि मुझे 20 करोड़ लोगों को दीजिए, मैं दुनिया का नक्शा बदल दूंगा। लेकिन सन्त इन्गेशस ने कहा मुझे बारह लोग दीजिए। हमारे देश में गुरु गोबिन्द सिंह ने मांग की कि मुझे पांच आदमी चाहिए, केवल पांच। बड़े साम्राज्य से गुरु गोविंद सिंह को मुकाबला करना था। चारों ओर फैला हुआ विस्तृत साम्राज्य था, उसके मुकाबले में गुरुजी खड़े थे। लेकिन उन्होंने कहा पांच आदमी चाहिए। और जब उन्हें आदमी मिल गए, तब फिर उन्होंने कहा – उसमें से एक-एक आदमी की गुणवत्ता मैं बढ़ाऊंगा। 'सवा लाख से एक लड़ाऊं, तभी गोविंदसिंह नाम कहाऊं।' 'चिड़िया से मैं बाज लड़ाऊं, तभी गोबिन्द सिंह नाम कहाऊं।' ऐसा कहा। वे संख्या की, डेमोक्रेटिक क्राईटेरिया की, कितने वोटर हैं, ये सारे नये मापदण्ड आदि जानते ही नहीं थे। इस अर्थ में वे अनाड़ी थे। आज हम लोग अलग मापदण्ड लेकर खड़े हो गए हैं। जिन्होंने दुनिया का नक्शा बदला है, उन्होंने सर्वप्रथम संख्या की फिकर नहीं की, यह स्पष्ट दिखाई देता है। शक्ति का मापदण्ड संख्या नहीं थी। यह सच है कि संख्या के कारण शक्ति बढ़ती है, किन्तु संख्या का अपना अलग स्थान नहीं है। प्राथमिकता नहीं है। एशिया में जैसा हिन्दुस्थान सर्वप्रथम राष्ट्र है। जैसा प्रथम सुसंस्कृत राष्ट्र यूरोप का ग्रीस हो गया है। इस ग्रीस में एक बड़ा दार्शनिक था, उसका नाम डायोजीनिस था। इनकी कई कहानियां हैं। जिसमें से एक घटना उनके जीवन की ऐसी आती है—एक दिन दोपहर के समय हाथ में लालटेन लेकर मार्केट में आये और इधर-उधर लालटेन लेकर घूमने लगे। दोपहर के समय जब सूरज ऊपर आ जाता है, धूप थी। सारी चीजें आंखों से स्पष्ट दिखाई देती थीं। तो भी ये लालटेन ऐसा ऊपर करते हुए इधर-उधर देखते हुए आगे बढ़ रहे थे। लोगों को बड़ा आश्चर्य लगा। यह आदमी पागल हो गया है क्या? यह बड़ा श्रेष्ठ दार्शनिक है, ऐसा क्यों कर रहा है? भीड़ इकट्ठा हो गई। एक ने कहा कि दार्शनिक साहब, आखिर लालटेन लेकर क्या खोज रहे हैं? उन्होंने कहा मैं आदमी को खोज रहा हूं। आई एम सर्चिंग ए

मैन। क्या ? आदमी को खोज रहा हूं ! हां, मैं आदमी को खोज रहा हूं। आई एम सर्चिग दि मैन । हम तो सारे यहां खड़े हैं। हम आदमी नहीं हैं क्या ? आप किसको खोज रहे हैं ? उन्होंने कहा मैं असली आदमी को खोज रहा हूं । जिसके अन्दर वास्तव में इन्सानियत होगी, वास्तव में आदमियत होगी । उस असली आदमी को मैं खोज रहा हूं । इसलिए लालटेन लेकर आया हूं कि कहीं मिल सकता है, असली आदमी ।

ऐसा लगता है, कि ये जो बड़े लोग हैं, इनके सोचने का ढंग अलग और आजकल के हम लोगों के सोचने का ढंग अलग है ।

दोनों में कुछ अन्तर है ऐसा दिखाई देता है । केवल संख्या शक्ति का मापदण्ड हो सकती है क्या ? भारतीय मजदूर संघ ने प्रारम्भ से ही कहा– यह अकेला मापदण्ड नहीं हो सकता । शरीर में मोटापन है– अच्छा है। लेकिन वह पहलवान का मोटापन चाहिए, चर्बी वाले का मोटापन नहीं होना चाहिए। मोटापन में भी क्वालिफिकेशन है, लेकिन वह पहलवान का होगा, तभी ठीक है । यह जो अन्दरूनी मापदण्ड है, वह क्या है ? कोई कहेगा कि साहब, ऐसा जोरदार लीडर होना चाहिए, जो भाषण देने के लिए खड़ा हो जाये तो तालियां बजनी प्रारम्भ हो जावे । हमारे बहुत सारे कार्यकर्ता तो भाषण भी बड़ी मुश्किल से दे सकते हैं, किन्तु बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं । लच्छेदार बोल नहीं सकते । हमने उनको कहा है कि भाई, लच्छेदार तो बोलो ही नहीं । लोग समझते हैं, लच्छेदार भाषण देने से अपना प्रभाव होता है । लोग पसन्द करते हैं भाषण इसका मतलब क्या है ? प्रभाव का मतलब क्या है ? एक भाषण है जो इन्टरटेन करता है । इन्टरटेन में इसको जिंदा की, उसकी निंदा की । जरा चमक-दमक वाले कई शब्दों की रचना की । लोग खुश हो जाते हैं । तालियाँ बजाते हैं । दूसरा भाषण होता है, जिसमें से हमें शिक्षा प्राप्त होती है । जिस प्रेरणा के कारण आदमी मर मिटने के लिए तैयार हो जाता है । लच्छेदार भाषण का मतलब होता है एन्टरटेनिंग स्पीच । पांच रुपये अगर घर से खर्च के लिए हैं, तो टिकट निकाल कर सिनेमा में जाना । बिना टिकट के तीन घण्टा नेताजी का भाषण सुनने से भी इन्टरटेनमेंट हो सकती है, तो पाँच रुपया क्यों खर्च किया जाय ! यह जो हिसाब है, यह इन्टरटेन स्पीच की है । लेकिन इसके कारण त्याग करने की प्रेरणा, मैं अपने सर्वस्व की बाजी लगा दूंगा—इस तरह का विचार इसके कारण निर्माण हो सकता है क्या ? किन्तु हम देखते हैं कि किसी भाषण में कुछ मामूली बात रहती है, इससे लोगों के जीवन में त्याग की प्रेरणा आ जाती है । झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के जीवन में एक प्रसंग आता है । वह चिक के पर्दे के पीछे बैठी है, अंग्रेजों का रेजिडेन्ट पर्दे के उधर है । और

वह बता रहा है कि तुम्हारा जो राज्य है, वह अंग्रेजों ने ले लिया है। तब पर्दे के पीछे से रानी ने एक ही वाक्य कहा—'मैं मेरी झाँसी किसी को नहीं दूंगी।' बहुत लम्बा भाषण नहीं था। तालियों के लिए नहीं था। कहा कि मैं मेरी झाँसी किसी को नहीं दूंगी। यह एक वाक्य पूरे भारत में ऐसा फैल गया, अंगार के जैसा कि सारे लोग लड़ने के लिए तैयार हो गए। मर मिटने के लिए तैयार हो गए। शायद बहुत बड़े इन्टेलेक्चुअल स्पीच के बाद भी यह एफेक्ट नहीं कर सकता था। हम जानते हैं—संघ के सन् चालीस के शिक्षावर्ग के समय परम पूजनीय डॉक्टर जी ने कोई लम्बा भाषण नहीं दिया। तालिया मारू भाषण नहीं दिया। लच्छेदार भाषण नहीं था। बीमार थे। पाँच छः मिनट का भाषण था। और उसमें उनका वाक्य था कि मुझे यह दुःख है कि इस वर्ग में मैं आपकी सेवा नहीं कर सका। उनकी तपश्चर्या, उनका सारा जीवन, और बीमार होते हुए भी उनके मन की यह पीड़ा कि मैं आपकी सेवा नहीं कर सका, इस एक वाक्य के कारण सैकड़ों लोग प्रचारक के नाते निकले। क्या किसी लच्छेदार भाषण में इतने सारे प्रचारक निकालने की क्षमता है ? हमें सोचना चाहिए, प्रेरणा कहाँ से मिलती है। शक्ति का स्रोत कहाँ से है। शक्ति का स्रोत केवल लच्छेदार भाषण में नहीं है। एक बहुत अच्छा उदाहरण आता है। मोहम्मद साहब के बाद जितने भी खलीफा हो गए, उनमें ओमर साहब का नाम बड़ा प्रसिद्ध है। उनके जीवन की एक घटना है कि एक बुढ़िया का नाती ज्यादा मीठा खाता था। हकीम साहब ने बतलाया कि इसको मीठा नहीं खाना चाहिए, नहीं तो मेरी दवा का कोई असर नहीं होगा। तब अपने नाती को लेकर बुढ़िया ओमर साहब के पास गई। कहा कि हकीम साहब ने ऐसा-ऐसा कहा है। आप जरा इसको बोल दीजिए। मेरा तो नहीं मानता, आपका मानेगा। ओमर साहब ने कहा मैं बोलूंगा, 15 दिन के बाद में। 15 दिन के बाद वह बुढ़िया उस अपने नाती, बच्चे को लेकर आई। तो ओमर साहब ने कहा बच्चा मीठी चीज नहीं खानी चाहिए, तुम्हारे शरीर के लिए अच्छी नहीं है। बच्चे ने इसे मान लिया। बुढ़िया ने सवाल किया कि साहब इतना एक ही वाक्य कहना था, तो पन्द्रह दिन बीच में किस लिए बिताये। आज आपने कह दिया, वही बात, आप 15 दिन पहले कह सकते थे। ओमर साहब ने कहा इसका कारण है। जो चीज बच्चे को छोड़ने के लिए मैं कह रहा हूं, उस चीज का मैं भी लालची था। मुझे भी वही चीज पसन्द आती थी, अब मैं यदि लालच के साथ वह चीज हमेशा खाता हूं और मैं अगर इस बच्चे को कहूं कि तुम छोड़ दो तो उसका असर होने वाला नहीं था। तुमको छुट्टी देने के बाद 15 दिन तक मैंने मीठी चीज खाना बंद कर दिया। अब मुझे लगा कि मुझे नैतिक अधिकार प्राप्त हो गया है और मैं बच्चे को कहूंगा तो उसका असर होगा। केवल लच्छेदार भाषण से असर नहीं होता है।

अपने जीवन में कितनी बातें आती हैं। हमारा जीवन किस तरह का है, जीवन-क्रम किस तरह का है, व्यवहार किस तरह का है।

आजकल ऐसा होता है कि यदि किसी को कहा कि ध्येयनिष्ठ होना चाहिए, तो लोग कहते हैं हम ध्येयनिष्ठ हैं। मतलब यह कि हम समझ गये हैं कि भारतीय मजदूर संघ का ध्येय क्या है। हम भाषण भी भारतीय मजदूर संघ के बारे में बहुत बढ़िया देते हैं। गेट मीटिंग में हम भाषण देते हैं, लोग तालियां भी बजाते हैं। इसलिए हम ध्येयनिष्ठ हैं। केवल सिद्धान्त समझना—ध्येयनिष्ठा नहीं है। सिद्धान्त का प्रतिपादन बड़ी अच्छी शैली में ढंग से करना ध्येयनिष्ठा नहीं है। हम अपने जीवन को किस तरह बदल सकते हैं। किस तरह संयमित कर सकते हैं। ध्येय ही हमारे सम्पूर्ण जीवन में है या नहीं? मेरे एक मित्र हैं। एमरजन्सी में अण्डरग्राउण्ड रहने का मौका था। मैं और हमारे मित्र दोनों एक जगह अण्डर ग्राउण्ड थे। अण्डर ग्राउण्ड जीवन में कुछ असुविधा तो होती ही है। हम सुबह ही इकट्ठा आए और शाम को चाय के समय वे हमसे कहने लगे कि ठेंगड़ी जी, अब हम तो इतनी झंझट नहीं करने वाले हैं, हमने कहा, क्यों? बोले यह कुत्ते की जिन्दगी यहाँ से वहां भागो, वहां से यहां भागो, कहीं नहाना होता है, कहीं नहीं होता। कहीं खाने को मिलता है, कहीं सोना होता है, कहीं नहीं होता – यह तो कुत्ते की जिन्दगी जैसी है। इससे अच्छा है—मैं यहीं ठहरूंगा। पुलिस पकड़कर ले जाएगी तो जेल में तो ठीक ढंग से रहेंगे। ये दौड़-धूप मुझसे बर्दाश्त नहीं होती। हमने उनसे कहा कि भाई, थोड़े दिन पहले हम और तुम किराये की साईकिल लेकर रास्ते पर घूमते थे और किराये का पैसा देने के लिए अपनी जेब में पैसा भी नहीं था, इसलिए साईकिल दूसरे के हाथ से भेज देते थे। और फिर उस रास्ते से जाना भी हम टालते थे। तुम्हारी और हमारी ऐसी हालत थी और आज तुम एकदम इतने नाजुक हो गए हो कि तुमको ऐसी जिन्दगी बर्दाश्त नहीं होती? ध्यान में आया कि जो सुख सुविधा के आदी हो जाते हैं, जिनको आराम से रहने की आदत हो जाती है, वे कितने भी भाषण देने वाले हों, जहां संकट का और परीक्षा का समय आता है, वहां उनकी ध्येयनिष्ठा उनका साथ नहीं देती। वे काम्प्रोमाईज करने के लिए तैयार हो जाते हैं। दुनिया के इतिहास में भी ऐसा दिखाई देता है।

कम्युनिस्टों के एक श्रेष्ठ कार्यकर्ता थे—गोपालन। उन्होंने आत्मचरित्र लिखा है। बड़ा अच्छा लिखा है। उन्होंने लिखा कि हम कम्युनिष्टों की बड़ी चर्चा हुई, पार्लियामेंट में, असेम्बली में जाना या नहीं? किन्तु यह तय हुआ कि जाना चाहिए। किसके लिए? पार्लियामेंट के द्वारा क्रान्ति होगी, इन्कलाब होगा। क्रान्ति के लिए जनता को तैयार करना है। उसके लिए कई मंचों की

आवश्यकता है। एक मंच ट्रेड यूनियन है। एक मंच किसान सभा है, एक मंच स्टुडेन्ट फेडरेशन है, पार्लियामेंट का भी मंच के नाते उपयोग करेंगे। जन जागरण का एक साधन हम इस प्रकार सम्पन्न करेंगे। ऐसा कहते हुए हम लोग पार्लियामेंट में गए। पार्लियामेंट में जाने के पहले उन्होंने कहा कि हम बीड़ी मजदूरों में काम करते थे। कुछ साथी बीड़ी मजदूरों की बस्ती में रहते थे। उनकी झोपड़ी में सोते थे। वे गरीब लोग हैं। अच्छे गन्दे सभी उनकी तश्तरियों व प्यालियों में भोजन करते थे। लेकिन दिल्ली में गये तो वहां के तारकोल रोड्स, लम्बे-चौड़े साउथ एवेन्यू, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली की बिजली की झलझलाहट, पार्लियामैंट की एयरकन्डिशण्ड सारी एरिया, फिर अपना फ्लैट और बंगला, कभी मिनिस्टर के यहां दावत है तो कहीं प्राईम मिनिस्टर के यहां, कहीं राष्ट्रपति के यहां दावत है। वे बोले हमारे यहां कुछ साथियों को ऐसा लगने लगा कि क्रान्ति क्या होगी ? नहीं होगी। किसने देखा है क्रान्ति को ? अब दिल्ली में ही रहना अच्छा है। अब कौन केरल में जाएगा, फिर बीड़ी मजदूरों के गन्दे मकान में जाएगा, उनकी गन्दी झोपड़ी में सोएगा। उनकी गन्दी थालियों में खाना खाएगा। हमारे साथियों ने कहना शुरू किया कि आपको पता है एम० पी० होना मामूली बात थोड़े ही है। कई जिम्मेवारियां रहती हैं। ढेर सारे कागजात आते रहते हैं, सारे पढ़ने पड़ते हैं। बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। अब कहां हमको गांव जाने की और बीड़ी मजदूरों के साथ बात करने की फुर्सत है। उन्होंने टालना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे नेता एक तरफ, कार्यकर्ता दूसरी तरफ। नेता दिल्ली में, कार्यकर्ता अपनी बस्ती में। यूनियन पर का होल्ड समाप्त हो गया। और सबसे बड़ी बात कि ऐसे आदमी की आदत खराब हो गई। अब उसको कोई कहे कि फिर से बीड़ी मजदूरों में जाकर काम करें, वह तैयार नहीं है। हमारे यहां मच्छन्दरनाथ के बारे में कहते हैं कि मच्छन्दरनाथ योगियों के गुरु थे। योग मार्ग के सर्व प्रथम अगुआ मच्छन्दरनाथ ही माने जाते हैं। भीख मांगते-मांगते वे एक स्त्री राज्य में चले गए। रानी के यहां भिक्षा मांगने के लिए गए। रानी इनके रूप पर मोहित हो गई। रानी ने कहा—"महाराज आप हमारेमहलमेंरहिए।" उन्होंने कहा, "नहीं नहीं" मैं योगी हूं, मैं नहीं रहसकता।" बोली, 'क्यों ? आपको डर लगता है कि आप यहां रहेंगे तो आपका मन भ्रष्ट हो जाएगा।" उन्होंने कहा, "नहीं, नहीं मैं तो योगीराज हूं। मैं कैसे भ्रष्ट हो सकता हूं।" तो रानी बोली "आपकी इतनी हिम्मत है तो यहां रहिए—नहीं तो मैं समझूंगी आप कायर हैं, आपको लगताहै कि आप भ्रष्टहो जायेंगे। "बोले' नहीं, मैं भ्रष्ट होने वाला नहीं हूं। मैं यहां रहा तो भी योगीराज हूं।" रानी बोली—रहिए। वे रह गए। एक बार रहने के बाद क्या-क्या हुआ होगा—अपने को पता नहीं है। लेकिन धीरे-धीरे उनका बाहर जाना बन्द हो गया। रानी ने

बाहर के लोगों के साथ इनका सम्पर्क भी बन्द करा दिया। योगीराज और रानी ये दोनों ही प्रेम के साथ आपस में रहते थे। इनके शिष्यों को बड़ी चिन्ता हुई कि हमारे गुरु महाराज कहां गए ? कहते हैं कि उनके शिष्य गोरखनाथ खोज करते-करते उस गांव तक पहुंच गए। उस राज्य तक पहुंच गए। गोरखनाथ के साथ उनके और गुरु भाई थे। लोगों से पूछा कि ऐसे श्रेष्ठ योगीराज यहां आए थे, आपने देखे हैं ? बोले कैसे थे ? उनका स्वरूप क्या था ? तो उन्होंने उनका वर्णन किया। लोगों ने बताया अरे, वह धींगड़ा तो अभी रानी के महल में है। काहे का योगीराज ! बोले, क्यों क्या हुआ ? उन लोगों ने बताया वे वहां गए और वहां के हो गए। अब वापिस आने की बात नहीं है। लोगों ने बड़ा खराब उनके बारे में बोला। गोरखनाथ को बड़ा दुःख हुआ। बोले, हम अभी उनके पास जाकर बात करते हैं। बोले ऐसी इजाजत नहीं है, जैसे आज होता है—लीडर साहब को टाइम नहीं है। बड़े बीजी हैं। कार्यकर्ता से नहीं मिल सकते। इन्हें बताया गया कि आपसे मुलाकात करने का उनको टाईम नहीं है। गोरखनाथ ने कहा भाई, भिक्षा देने के लिए तो टाइम है ? बोले, है। भिखारी बनने में क्या लगता है ? उन्होंने भिखारी जैसा भेष बनाया और ढोलक आदि लेकर भिक्षा मांगने के लिए रानी के महल में पहुंच गए। उनको यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि उनके गुरु महाराज रानी को साथ लेकर बगीचे में झूला झूल रहे हैं। उनके लिए यह दृश्य बड़ा आश्चर्यजनक था। गोरखनाथ ने ढोलक बजाना शुरू किया। ढोलक में से रानी को तो बोल सुनाई देते थे, डुम डुम, डुम डुम। लेकिन मच्छन्दरनाथ को बोल सुनाई दिया 'चलो मच्छन्दर— गोरख आया' 'चलो मच्छन्दर—गोरख आया।' मेरे शिष्य मुझे खोजने के लिए यहां आ गए हैं। मच्छन्दरनाथ को बड़ा पश्चाताप हुआ, रात में अपने शिष्यों के साथ भाग गए। हम बड़े योगीराज हैं, हमारा स्खलन नहीं हो सकता है। ऐसा चलते-चलते फिर शिष्यों को कहना पड़ता है—'चलो मच्छन्दर—गोरख आया'—यहां तक हालत पहुंच जाती है। ऐसे उदाहरण अपने इतिहास में अनेक आते हैं।

ध्येयनिष्ठा का मतलब क्या है ? जिनके व्यक्तिगत जीवन में आराम, सुख-सुविधा है, वहां ध्येयनिष्ठा नहीं रह सकती। ध्येयनिष्ठा वहीं रह सकती है, जो हमेशा मेहनत करने के लिए तैयार हैं। कठिन जीवन बिताने के लिए तैयार हैं। सबके साथ मिलने के लिए तैयार हैं। जहां कहीं लोगों को दुःख-दर्द है, वहां वह कूद पड़ता है। किसी का भी दुःख देखकर जिसके हृदय में पीड़ा होती है, वही ध्येयनिष्ठ हो सकता है। और जहां एक बार ध्येयनिष्ठा कम हो जाती है, सुख, सुविधा और आराम की जहां लालच पैदा होती है, वहां सारा दिल ही बदल जाता है। प्रारम्भ में एकदम ये बदल नहीं होता। मैंने कई नैष्ठिक लोगों को देखा है—ट्रेड यूनियन के क्षेत्र में। मैं अन्य यूनियनों में भी काम कर चुका

हूं, इन्टक में रहा। कम्युनिष्टों की दो यूनियनों में भी काम किया हूं। सोशलिस्टों के साथ काम किया हूं। वहां बिलकुल शुरू में जब बातचीत के लिए मालिक साहब ने बुलाया, उस समय हम इन्टक में थे। हमने कहा भाई, बातचीत मालिक के घर में नहीं होगी, आफिस में होगी। हमारा साथी कहने लगा 'बात घर में क्या ? आफिस में क्या ? बात तो वही होनी है।' हमने कहा बहुत फरक है। मालिकों ने कहा कि आप बहुत बड़े नेता हैं। अपने अकेले आइए, किसी मजदूर को मत ले आइए। हमने कहा यह होने वाला नहीं है। जो सम्बन्धित उद्योग के मजदूर हैं, उनके पदाधिकारियों को लेकर ही आपके पास आएंगे। वे बोले आप चाय के खर्चे को बढ़ाना चाहते हैं। वास्तव में यह मालिकों की ट्रिक रहती है। हम मालिकों के साथ चायपान कर रहे हैं—कुर्सी से कुर्सी लगाकर, इसमें बड़ा गौरव लगता है कि हम जनरल मैनेजर के साथ मालिक के साथ चाय पी रहे हैं। और वह ऐसे ही जरा बाहर जाकर अपना रोब भी दिखाता है। मजदूरों पर भी अपना रौब दिखाता है और कहता है कि कौन हैं—दूसरी यूनियन वाले ! भारतीय मजदूर संघ वालों को कौन पूछता है ? मालिक तो हमको पूछता है। अरे, मालिक तो तुमको पूछेगा ही। तुम धोखेबाज जो हो, इसलिए तुमको पूछेगा ही। तुम खरीदे जा सकते हो, इसलिए पूछेगा। मालिक इतना बेवकूफ नहीं है कि भारतीय मजदूर संघ को एकदम मान्यता देगा, वह जानता है कि ये खरीदे जाने वाले लोग नहीं हैं। इसलिए वह हम लोगों को व्यावहारिक नहीं समझता। किन्तु इसकी शुरुआत कहां से होती है। भाई, बातें करनी हैं तो मालिक के यहां जाने में आपत्ति क्या है। फिर चाय लेने में आपत्ति क्या है। फिर मान लीजिए डिनर पर बुलाया तो कौन सा इसमें फर्क पड़ता है। एक बार डिनर ले लिया—कौन सा पाप कर दिया, खरीदे थोड़े ही जा रहे हैं। होते-होते मच्छन्दरनाथ के जैसे लोग ऐसे फंस जाते हैं कि हमारा मजदूर शायद हमें निकालने की कोशिश भी करे तो हम ही अन्दर खींचते हैं कि भाई, हमको बाहर मत निकालो। हमें इसी अधःपतन में आनन्द आता है। धीरे-धीरे आदमी का स्खलन होता है।

एक यूनियन है—हम नाम नहीं लेना चाहते, सैन्ट्रल गवर्नमैंट एम्पलाईज की। 1958 में उसकी संघर्ष क्षमता बढ़ती जा रही थी। साठ तक चरमसीमा तक पहुंच गई। उस समय श्रम मंत्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने ज्वाईन्ट कन्सल्टेशन मशीनरी लाई। मेरा उनका सम्बन्ध था। भारतीय मजदूर संघ उस समय छोटा था। सैन्ट्रल गवर्नमेंट एम्पलाईज में हमारा काम भी नहीं था। कुछ अपने लोग थे। तब हमने उन नेताजी से कहा—देखिए भाई, आप लोग जे. सी. एम. में मत जाइए ? वे बोले, जे. सी. एम. क्यों नहीं जाना चाहिये ? हमने कहा जे. सी. एम. में आपको कुछ मिलेगा नहीं। जे. सी. एम. लाने का उद्देश्य केवल इतना ही है कि

विदेश में प्राईम मिनिस्टर की इज्जत रहे कि देखो कितने मजदूरों की सलाह से कारोबार चला रहे हैं। प्राईम मिनिस्टर की इज्जत बढ़े, इसीलिए जे. सी. एम. है। लेकिन जे. सी. एम. में कोई भी राष्ट्रीय मोनार्की प्राप्त होने वाली नहीं है। इंग्लैंड में जो ह्विटले कौंसिल है, उसकी लाईन पर यह नहीं है। ह्विटले कौंसिल के हर स्तर पर एडमिनिस्ट्रेशन के रिप्रेजन्टेटिव, मजदूर रिप्रेजन्टेटिव इकट्ठा आते हैं। बात करते हैं। ह्विटले कौंसिल में ये प्रोविजन है कि जहां एडमिनिस्ट्रेशन और मजदूरों का एकमत नहीं होता है, सहमति नहीं होती, वहां आरबिट्रेशन के लिए मामला दिया जाता है। हमारे यहां फर्क है। ह्विटले कौंसिल में ये प्रोविजन है कि एक बार एडमिनिस्ट्रेशन और कर्मचारियों में मतभेद होने के कारण यदि मामला आरबिट्रेशन को दिया जाता है—तो आरबिट्रेशन का जो फैसला होगा—वह दोनों पार्टियों पर फाईनल और बाइंडिंग हो जाता है। दोनों को इस पर तुरंत अमल करना चाहिए, सरकार को भी अमल करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। हमारे यहां यह फाईनल और बाइंडिंग नहीं है। सरकार इसको चाहे माने न माने, चाहे आधा माने, चाहे एक पैसा ही माने। हमने कहा इतना फर्क और है कि कोई भी आपकी राष्ट्रीय मांग इसके द्वारा पूरी होने वाली नहीं है। लेकिन कुछ लोगों को खुजली शुरू हुई कि भाई, ये जे० सी० एम० की मशीनरी खड़ी हो जाएगी, हम इसमें बैठेंगे, मजदूरों की बातें तो पूरी होती हैं कि नहीं होतीं, ये तो बाद की बात है। हम इसमें बैठेंगे, क्या-क्या असर होगा? नम्बर एक मजदूरों पर हमारा असर होगा कि ये हमारे नेता हैं, सरकार में इनकी मान्यता है। फिर अपने इण्डस्ट्रीज में अपना प्रभाव जमाने में सहायता होगी। और इस तरह के जो नेता होते हैं—वे बड़े चतुर होते हैं, वे दूसरी भी बात देखते हैं। एक बार रिकगनाईज यूनियन के हम नेता बन जायेंगे तो वे दूसरी भी चतुराई करते हैं कि अपने मेम्बरशिप बढ़ाने के चक्कर में नहीं पड़ते। अपनी शक्ति बढ़ाने के चक्कर में नहीं पड़ते, नए लोगों को लेने के चक्कर में नहीं पड़ते, नए कार्यकर्ताओं के निर्माण करने के चक्कर में नहीं पड़ते। वे सोचते हैं कि ज्यादा मेम्बर्स हो जायेंगे तो नए कार्यकर्ता खड़े हो जायेंगे, नये कार्यकर्ता खड़े होंगे तो मेरे लिए राईवल्स खड़े हो जायेंगे। कम्पटिटर्स खड़े हो जाएंगे। मेरी लीडरी को कोई चैलेंज कर देगा। अब रिकगनीशन तो मिल ही गई है। जब एक बार रिकगनीशन मिल गई तो अब अपनी ठेकेदारी हमेशा के लिए कायम रहनी चाहिए। इस दृष्टि से एक बार रिकगनीशन मिलने के बाद उस विशेष यूनियन के पदाधिकारियों ने ऐसी ही चतुराई की। पहली बात किसी भी नए जवान कार्यकर्ता को सामने आने ही नहीं दिया। मेम्बरशिप अपनी बढ़ाई नहीं, क्योंकि रिकगनीशन थी, ज्यादा मेम्बर बढ़ाने की क्या आवश्यकता। खानापूर्ति के लिए इतनी मेम्बरशिप है और फिर जैसे-जैसे ये एडमिनिस्ट्रेशन के अधिकारियों के साथ,

कभी-कभी मिनिस्टरों के साथ खाने-पीने लगे तो और क्या चाहिए? मिनिस्टरों के साथ रहे, तो छोटी-बड़ी बातें हो ही जाती हैं, लड़के की पढ़ाई के लिए मास्टर भेजना है या और कुछ काम है, सब होने लगता है। ये मजदूरों का सवाल लेकर लड़ाई-झगड़ा करेंगे तो न लड़के का बनेगा, न खुद का बनेगा, इसमें बुद्धिमानी क्या है? फिर अनेक प्रकार की सहायता हो जाती है, रेलवे के पासेस, पी० टी० ओ० मिल जाते हैं, घर बैठे यूनियन में भी कुछ फैसिलिटीज़ है। फिर कमेटियों में जाना कितनी शानदार बात है। कमेटियों में जाने के लिए आप हवाई जहाज से प्रवास कीजिए, आपका फोटो भी खींचा जाएगा और खर्चा भी लीजिए और जब हवाई जहाज से जाते हैं तो दस-पांच लोगों को लेकर जाते हैं दिखाने के लिए कि अब हम छोटे नहीं रह गए। कल तक छोटे थे अब हम बड़े नेता हो गए हैं, हवाई जहाज से जाते हैं। अपना रौब बढ़ता है, बाकी लोगों पर भी रौब बढ़ता है। इतना ही नहीं तो जिन लोगों का घर में जरा कम रौब रहता है, वे उसकी पूर्ति इसके द्वारा भी करते हैं। रौब भी आदमी का बढ़ जाता है और फिर वहां जाने के बाद फाइव स्टार होटल में रहता है, सरकार खर्चा करती है और कमेटी में जाने आने में जितना खर्चा होता है, उससे ज्यादा पैसा मिलता है। इसलिए उसे हड़पकर अपने जेब में रख लेता है, किसलिए सेन्ट्रल लेबर आर्गेनाइजेशन को देना है? मैं गया था, मुझे पैसा मिला है, सेन्ट्रल लेबर आर्गनाइजेशन का इस पर क्या अधिकार है? यह भाषा भी उसे आ जाती है। बड़े चतुर लोग होते हैं, उन्हें पैसा भी हड़पने के लिए मिल जाता है! इस तरह से नेताओं को भ्रष्ट करने का सुनियोजित षड्यन्त्र (वेल प्लान्ट) सरकार और मालिकों द्वारा हर देश में होता है। अपने देश की बात नहीं है, हर देश में ऐसे नेता जो एक जगह लड़ाकू होगा, संघर्षशील होगा, उसको ढीला किया जाता है, उसको निकम्मा बनाया जाता है, उसके लिए पैसा खर्च करना, उसको सुविधायें आदि देना—सारे देश के मालिक करते हैं। सभी देश की सरकारें यही करती हैं, हमारे देश में भी चल रहा है। अनेक यूनियनों के बारे में ऐसा उदाहरण दिखाई देता है। जैसे-जैसे हवाई जहाज, फाइव स्टार होटल और जाने-आने का पैसा, फिर सैन्ट्रल लेबर आर्गनाइजेशन को न देते हुए अपनी जेब में रखना और घर और बाहर बदनामी— ये सारी बातें जैसे-जैसे होने लगीं, फिर संघर्ष से लोग कतराने लगे। 1958 में जो यूनियन सम्पूर्ण सेन्ट्रल गवर्नमेंट एम्पलाईज के सैक्टर में संघर्षशीलता के नाते नंबर एक पर थी और वही नेता मौजूद हैं जो आज सबसे पहले भागने वाले हैं। पिछले 19 जनवरी को औद्योगिक मजदूरों की हड़ताल जब घोषित हुई -- नैशनल कैम्पेन कमेटी की ओर से और सैन्ट्रल गवर्नमेंट के कर्मचारी भी इस हड़ताल में उतरने के लिए तैयार थे, उसी यूनियन

के नेताओं ने हिन्दुस्थान के मजदूरों की संगठित हड़ताल की पीठ में छुरा भोंका और इस तरह से गद्दारी की, जिसके कारण मजदूरों के प्रभाव में कमी आ गई। ऐसी गद्दारी करने की शुरू से मन में इच्छा थी—ऐसी बात नहीं थी। छोटी बातों से शुरुआत होती है—एक कप चाय लेने में क्या आपत्ति है, थोड़ा सा डिनर ले लिया, इसमें से क्या बिगड़ता है, एकाध बार हवाई जहाज से गए तो कौन-सा बड़ा फर्क पड़ता है। हम तो योगीराज हैं- हमारा स्खलन कहां हो सकता है ? हम योगीराज हैं—ऐसा कहते-कहते स्खलन हो जाता है। बाद में मजदूर एक तरफ, नेताजी दूसरी तरफ—ऐसी स्थिति पैदा हो जाती है।

इन सभी बातों पर आप गम्भीरता से विचार करें—मेरी प्रार्थना है।

भारतीय मजदूर संघ

राष्ट्र और गरीब लोगों की सेवा का साधन व माध्यम

मुझे यह आदेश हुआ है कि समारोप के रूप में मैं कुछ कहूं। प्रारंभ से अन्त तक इस अधिवेशन की कार्यवाही बहुत ही ठीक ढंग से सम्पन्न हुई है। इसका प्रारंभ ही आदरणीय खन्ना जी के मार्गदर्शन एवं उनके द्वारा उद्घाटन से हुआ है। 'वेल बिगन इज हाफ डन' यह कहावत चरितार्थ हुई है। उद्घाटन के अवसर पर भारतीय मजदूर संघ के अलावा देश में काम करने वाली अन्य केन्द्रीय श्रम संस्थाओं के प्रतिनिधियों की उपस्थिति और उनके भाषण तथा जो उपस्थित नहीं हो सके, ऐसी संस्थाओं के शुभ संदेश सुनने को मिले हैं। इससे आपको यह अनुभव में आया होगा कि देश का मजदूर परिस्थिति की गंभीरता को समझकर अब सम्पूर्ण मजदूर एकता की ओर बढ़ना चाहता है। यह बात तो ठीक है कि अन्यान्य केन्द्रीय श्रम संस्थायें एक ओर हैं और दूसरी ओर जेन्यूइन ट्रेड यूनियनिज्म के आधार पर केवल हम अकेले चल रहे हैं। वे पोलिटिकल यूनियनिज्म से ऊपर नहीं उठे हैं, तो भी कुछ अपने कार्य के प्रचार और प्रभाव के कारण तथा कुछ विपरीत परिस्थितियों के कारण वे लोग, जो जेन्यूइन ट्रेड यूनियनिज्म की खिल्ली उड़ाते थे और पोलिटिकल यूनियनिज्म का ही प्रतिपादन करते थे, वे भी अब इतना तो मानने के लिए बाध्य हो गए हैं कि पोलिटिकल डिफरेन्सेस कुछ भी रहे, सभी को एक मंच पर आने की आवश्यकता है। और उतनी मात्रा में अपने ओरिजिनल पोलिटिकल यूनियनिज्म के सिद्धान्त से दूर और भारतीय मजदूर संघ की जेन्यूइन ट्रेड यूनियनिज्म के सिद्धान्त के नजदीक आने के लिए वे बाध्य हो गए हैं। इसके लिए हम उनका अभिनन्दन करते हैं और इसके कारण अपने सिद्धान्तों के प्रति हमारी जो श्रद्धा है, वह अधिक दृढ़ भी हो जाती है।

इस समय कुछ विदेशों से भी संदेश आए हैं। हम जानते हैं कि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संस्थायें हैं, किन्तु हम किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संस्था के साथ संलग्न नहीं हैं। वैसे तो अन्य केन्द्रीय श्रम संस्थाओं को फारेन एफिलिएशन, फारेन कान्टेक्ट, फारेन ट्रिप्स और फारेन मीन्स आदि का बड़ा ग्लेमर रहता है, किन्तु हम सिद्धान्तवादी होने के कारण इस ग्लैमर में बह जाने वाले नहीं हैं। हम बारीकी से अध्ययन कर रहे हैं कि ये जो तीनों अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काम

करने वाली लेबर आर्गनाईजेशन्स हैं, वे किस तरह काम करती हैं। भारतीय मजदूर संघ के जो सिद्धान्त हैं, इनके अनुकूल हैं या नहीं ? बड़े आराम व धीरज के साथ अध्ययन कर रहे हैं, हमें कोई जल्दबाजी नहीं है। शायद हिन्दुस्थान के मजदूर क्षेत्र में भारतीय मजदूर संघ एकमात्र ऐसा संगठन है, जिसको जल्दी नहीं है। बहुत आराम से हम लोग आगे बढ़ना चाहते हैं और हम यह भी जानते हैं कि जो ज्यादा जल्दी से आगे बढ़ते हैं, वे बहुत देरी से पहुंचते हैं, 'इतना ही नहीं कभी-कभी वे पहुचते भी नहीं हैं। हमारा यह आग्रह नहीं है कि किसी काम में जल्दबाजी की जाए। आग्रह यही है कि देर होने में आपत्ति नहीं, लेकिन काम जो हो वह ठीक ढंग से, उचित ढंग से होना चाहिए। 'नीट एण्ड क्लीन' होना चाहिए। अस्तु यह निश्चित है कि जो ज्यादा जल्दबाजी करते हैं, वे या तो देरी से पहुंचते हैं या पहुंचते ही नहीं और जो आराम मे, शान्ति से 'नीट और क्लीन' काम करते हैं, वे ठीक ढंग से, ठीक समय पर और ठीक स्थान पर पहुंच जाते हैं। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्बद्धता के बारे में भी हमें कोई जल्दबाजी नहीं करनी है। तीन में से कौन सी संस्था ठीक है, इसकी जांच-पड़ताल हम करेंगे। अच्छी लगी तो सम्बद्धता करेंगे, नहीं तो स्वतन्त्र रहेंगे। हमको जल्दबाजी नहीं है, 'नो इनडिफरेंस इन हैड।' इसका कारण आज से नहीं है। आज तो हम प्रगति करने वाले एक श्रम संगठन के नाते काम कर रहे है, लेकिन कल जब हम आदर्श स्थिति में पहुंच जायेंगे, उस आदर्श स्थिति में भी हमें जल्दी नहीं है।

कल कुछ हमारे बन्धुओं ने कहा कि हम यूनाईटेड फ्रन्ट क्यों करते हैं ? हमें यूनाईटेड फ्रन्ट की ही आवश्यकता क्यों महसूस होती है ? स्पष्ट है कि सरकार और सरमायेदारों का मुकाबला करने के लिए यूनाईटेड फ्रन्ट की आवश्यकता होती है। इसका मतलब यही है कि भारतीय मजदूर संघ अकेले अपने बलबूते सरकार और सरमायेदारों का मुकाबला आज नहीं कर सकता। वास्तव में आदर्श व्यवस्था यही होनी चाहिए कि भारतीय मजदूर संघ जो राष्ट्रवादी और जेन्यूइन ट्रेड यूनियन संगठन है, उसको इतना बलवान होना चाहिए कि गरीब विरोधी व मजदूर विरोधी ताकतों का मुकाबला करने के लिए और किसी के साथ हाथ मिलाने की उसे आवश्यकता न हो। अपने अकेले के भरोसे, अकेले के बलबूते, हम लड़ाई लड़ सकें—इस आदर्श अवस्था तक हमें अपना संगठन बढ़ाना है। यह स्पष्ट है कि इसमें समय लगेगा। यह आदर्श अवस्था जब आ जाएगी और सभी गरीब व मजदूर विरोधी शक्तियों का मुकाबला भारतीय मजदूर संघ अपने बलबूते कर सकता है... यह स्थिति जब आ जायेगी, संभव है कि तब तक हमें यदि ऐसा लगे कि ये जो तीन अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संस्थायें हैं, उनमें से हमारे उचित सिद्धान्तों के अनुकूल कौन हैं—इसकी खोज भी हम शुरू कर सकते हैं। अगले दशक का यह काम है। आज जल्दबाजी की आवश्यकता

नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय संलग्नता के विषय में हम जल्दबाजी में नहीं हैं। किसी भी विषय में हम जल्दबाजी क्यों करेंगे ? तो भी इस अपने अधिवेशन के लिए विदेशों से भी कुछ शुभ संदेश आए हैं, जिनसे यह पता चलता है कि भारतीय मजदूर संघ के विषय में कुछ उत्सुकता अब विदेशों में भी जागृत हुई है। अपने बढ़ते हुए प्रभाव का परिचय इससे हमें मिलता है।

अधिवेशन में कार्यक्रम के अनुसार जैसे प्रोसिजर होता है, महामंत्री की रिपोर्ट प्रस्तुत हुई है। वैसे भी जनरल सेक्रेटरी की रिपोर्ट प्रेस में जाने के पहले यह आवश्यक है कि सभी राज्य और महासंघों की रिपोर्ट केन्द्र कार्यालय में पहुंचनी चाहिए। अब धीरे-धीरे रिपोर्ट भेजने की आदत बढ़ रही है, लेकिन तो भी अभी अधूरी ही है। इसके कारण जनरल सेक्रेटरी रिपोर्ट में जो कुछ कमियां रह गई होंगी या कुछ बातें नहीं आईं उनके भी बारे में सोचा गया। वे सारी सूचनायें हमारे सामने आईं, वह महामंत्री की रिपोर्ट में जोड़ दिया गया है।

पहली ही बार विंध्य नर्मदा के दक्षिण में भारतीय मजदूर संघ के सर्वदेशीय शक्ति का प्रदर्शन पहले ही दिन यहां की शोभायात्रा के रूप में हुआ। और उसके पश्चात् हैदराबाद और आन्ध्र प्रदेश की जनता के साथ अपना सामंजस्य कायम रखने और आत्मीयता निर्माण करने की दृष्टि से खुला अधिवेशन भी बहुत ठीक ढंग से सम्पन्न हुआ। भारतीय मजदूर संघ की यही विशेषता है। भारतीय मजदूर संघ के पूर्व से काम करने वाले किसी भी सैन्ट्रल लेबर आर्गनाईजेशन ने पब्लिक रिलेशन्स निर्माण करने का प्रयास नहीं किया, जो बहुत आवश्यक था। मजदूरों की मांगें क्या हैं ? हालत क्या है ? औद्योगिक क्षेत्र की हालत क्या है ? इसकी जानकारी जनता को देते रहना, ताकि यदि सरकार के खिलाफ कोई संघर्ष छेड़ने की बारी आती है तो वास्तव में यही दृश्य निर्माण होना चाहिए कि गरीब मजदूर व सारी जनता एक तरफ तथा सरकार अकेले दूसरी तरफ रहे। किन्तु यह दुर्भाग्य की बात रही है कि भारतीय मजदूर संघ के निर्माण के पूर्व से काम करने वाली किसी भी केन्द्रीय श्रम संस्था ने इस तरह के पब्लिक रिलेशन्स डेवलप करने का प्रयास नहीं किया। उसका नतीजा यह निकला कि मजदूरों की मांगें जायज होते हुए भी अंग्रेज सरकार के डिवाईड एण्ड रूल की पॉलिसी को लेकर चलने वाली स्वतन्त्र भारत की सरकार आम जनता को मजदूरों के खिलाफ भड़काने में सफल हुई है और इसके कारण जब कभी सरकार के साथ लड़ाई लड़ने का मौका आता है, उस समय दृश्य यह नहीं रहता कि गरीब मजदूर और जनता एक तरफ और सरकार अकेली दूसरी तरफ। तो गरीब मजदूर अकेला एक तरफ और जनता, सरकार का साथ दे रही है— इस तरह का दृश्य रहता है। यह विपरीत परिस्थिति इसी कारण निर्माण हुई

है कि अन्य पहले से काम करने वाली श्रम संस्थाओं ने ट्रेड यूनियन्स के बारे में आम जनता को शिक्षित नहीं किया। भारतीय मजदूर संघ केवल लड़ाई की ही दृष्टि से ही नहीं, वैसे भी राष्ट्रवादी होने के कारण वह सम्पूर्ण राष्ट्र का ही हमेशा विचार करता है। हम मजदूरों को राष्ट्र के अन्य घटकों से अलग नहीं मानते। सम्पूर्ण राष्ट्र एक शरीर है और उसके विभिन्न अवयव हैं तथा उसी का एक अवयव यानी मजदूर। सम्पूर्ण शरीर का अपने अवयवों के साथ या अवयवों का सम्पूर्ण शरीर के साथ जो सम्बन्ध है, वही सम्पूर्ण राष्ट्र का मजदूर के साथ और मजदूर का सम्पूर्ण राष्ट्र के साथ सम्बन्ध है। इस अन्योन्याश्रित भाव का संस्कार लेकर यह कार्य प्रारम्भ हुआ है। हम जानते ही हैं कि जिसको नेशनल इन्टरेस्ट, अर्थात् राष्ट्रहित कहा जाता है, उसका आर्थिक पर्यायवाची शब्द, उपभोक्ताओं का हित है। इस दृष्टि से जहां स्वयं अपने मजदूरों के हित की हमें चिन्ता करनी है, वहीं हम यह भी जानते हैं कि सरकार और सरमायेदारों का हमला जितना मजदूरों पर है, उतना ही आम उपभोक्ताओं पर भी है। मजदूर क्षेत्र में उपभोक्ता और मजदूर दोनों में सामंजस्य निर्माण करने का प्रयास सर्वप्रथम भारतीय मजदूर संघ ने ही किया है। और इस दृष्टि से जहां-जहां कार्यक्रम होते हैं, वहां सामंजस्य निर्माण करने की दृष्टि से आम जनता को निमंत्रित करना, उनको विश्वास में लेना, अपनी बात उनको समझाना और उनकी बात हम समझ रहे हैं, यह भी उनको बताना—इसीलिए किसी भी अधिवेशन के खुले अधिवेशन का हम उपयोग करते हैं। हमारा यह उद्देश्य यहां के खुले अधिवेशन में सफल हुआ है, यह भी हम सभी अनुभव कर रहे हैं। प्रान्तशः हमारी बैठकें हुईं। प्रान्त के बारे में जितना सीमित समय में संभव है, उतना विचार हुआ। दूसरे दिन समूचे संगठन के बारे में भी सोच-विचार हुआ। पिछली बार हम लोगों ने तय किया था कि इस वर्ष को हम 'वित्तीय अनुशासन वर्ष' के रूप में मनावेंगे। तब से वित्तीय अनुशासन की ओर विशेष रूप से ध्यान गया है। यह फाइनांशियल डिसीप्लीन क्या है—यह भी हम लोगों को यहां समझाया गया। कहां कितनी फाईनांशियल डिसीप्लीन आ रही है, इसका निवेदन भी हमारे सामने हुआ। अपने-अपने राज्यीय शाखाओं में और औद्योगिक महासंघों में इस फाइनांशियल डिसीप्लीन को अधिक मजबूत कैसे बनाया जा सकता है—इसके बारे में भी विचार विमर्श हुआ। किस तरह से समूचा संगठन मजबूत हो सकता है? इस पर भी विचार हुआ। समय थोड़ा था, इस कारण यह जानते हुए भी कि यहां सभी प्रमुख कार्यकर्ता ही एकत्रित आए हैं, तो स्वाभाविक है कि हर एक के मन में कार्य के पूर्वानुभव के आधार पर नये-नये सुझाव होंगे। कई लोगों के मन में सुझाव रखने की इच्छा थी, लेकिन समय कम था, इसलिए जितना समय था, उतनी अवधि में और कार्य विस्तार की

दृष्टि से कुछ अच्छे व उपयुक्त सुझाव भी अपने सामने आए हैं। किस तरह संगठन खड़ा किया जा सकता है—यह भी बात हमारे सामने रखी गई। साथ ही साथ देश की स्थिति, देश के सम्पूर्ण मजदूरों की स्थिति, उद्योगों की समस्यायें, देश की आर्थिक समस्यायें आदि सभी बातों पर सर्वंकश विचार करते हुए विभिन्न उद्योगों के मजदूरों को, देश के मजदूरों को और देश को भी मार्गदर्शन करने वाले आर्थिक प्रस्ताव आप सभी ने पारित किए, जो सबके लिए मार्गदर्शक हैं। यह एक बहुत ही श्रेय देने वाली बात इस समय हुई है।

ध्येयनिष्ठा क्या है ? कार्यकर्ता कैसा रहे ? इसके विषय में भी कुछ विचार अपने सामने रखे गए। और फिर एक फार्मलिटी के नाते चुनाव भी सम्पन्न हुआ। हम सब जानते हैं कि चुनाव का महत्व हमारी संस्था में उस तरह का नहीं है, जिस तरह का अन्य संस्थाओं में है। इसका विश्लेषण अभी अपने मनहर भाई ने किया है। हम केवल व्यवस्था के नाते पदाधिकारियों की तरफ देखते हैं, अन्य संस्थाओं में पाश्चात्य व गलत ढंग की पद्धति अपनाने के कारण पदाधिकार, पोस्ट व आफिस के साथ प्रेस्टिजियस पॉवर इसका एसोसिएशन हुआ करता है। हमारे यहां पदाधिकार के साथ व्यवस्था, जिम्मेदारी, रिस्पान्सिबिलटी एण्ड अरेंजमेंट का एसोसिएशन है। हमारे यहां चुनाव का वह महत्व नहीं, जो अन्य स्थानों पर है। हमारे आदरणीय नरेश गांगुली, जिन्होंने इतने साल तक अध्यक्ष पद का दायित्व निभाया, इसके लिए बहुत कष्ट उठाये हैं। इस अध्यक्ष पद के दायित्व के कारण ही एमरजेन्सी के समय आदि से अन्त तक पूरा समय उनको जेल में ही रहना पड़ा। जैसा कि भारतीय मजदूर संघ की प्रतिज्ञा रही है कि भारतीय मजदूर संघ क्या करना चाहता है ? तो शुरू में ही कहा गया था कि मजदूरों को आबाद करना और कार्यकर्ता को बर्बाद करना हमारा उद्देश्य है। सबको आबाद करना– यह भारतीय मजदूर संघ का काम नहीं है। सामान्य मजदूर को आबाद करने के लिए और प्रमुख कार्यकर्ता को बर्बाद करने के लिए प्रारम्भ से ही कहा गया है। दी बेस्ट शुड सफर—हमारा उद्देश्य रहा है। और इसी दृष्टि से सबसे अधिक बरबादी उठाने का काम शायद हमारे नरेश दा जैसे नेता पर ही पड़ा। उनके घर की हालत तो बिलकुल ही खराब हो गई और शरीर की भी हालत खराब हो गई। इसी कारण से कार्य से मुक्त होने के लिए उन्होंने प्रार्थना की। किसी की भी इच्छा नहीं थी कि उनको कार्य से मुक्त किया जाय। लेकिन आखिर किसी को कितना बर्बाद करें—इसका भी थोड़ा-सा हिसाब तो रखना ही पड़ता है। कार्यकर्ता को तो पूरी तरह से बर्बाद होने की तैयारी रखनी चाहिए। कितनी सीमा तक उसको बर्बाद करना—यह विचार शेष लोगों को करना चाहिए। इसी दृष्टि से उनको कार्य से मुक्त करने के लिये सोचा गया। इस समय सभी लोगों की ओर से मैं यह कहना

चाहता हूं कि उन्होंने जो कार्य किया है, स्वयं अपनी बर्बादी स्वीकार की है—कृतज्ञतापूर्वक हम उन सब बातों का स्मरण कर रहे है। आगे भी उनकी सेवा का लाभ तो हमें होता ही रहेगा। उनके शरीर स्वास्थ्य की दृष्टि से भगवान की कृपा उन पर हमेशा रहे, सबकी ओर से मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं।

यह कार्य सारा पारिवारिक है और इस दृष्टि से जो नई टीम आई है, इसको मैं अपनी ओर से, आप सब लोगों की ओर से शुभ कामनाएं देता हूं। नवनिर्वाचित अध्यक्ष का उचित मार्गदर्शन भी हमें प्राप्त हुआ। कार्य के विषय में बड़े भाई से सूचना भी प्राप्त हुई। इसके पश्चात अब और कुछ कहने के लिए बाकी नहीं बचता। अनेक बार उदाहरण में बताया है कि गायन का कार्यक्रम बहुत बढ़िया लगता है। तो भी सुबह होने से थोड़ा पहले लोग कहते हैं कि आखिरी कार्यक्रम के नाते भैरवी होनी चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि भैरवी के पहले जो कुछ गाना हुआ है, उसमें कुछ त्रुटि थीं, किन्तु हर चीज का कुछ न कुछ समारोप होता है। अत: यह समारोप त्रुटि या कमी की पूर्ति करने के लिये नहीं है। जैसे यज्ञ का उदाहरण है। ठीक ढंग से यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न होता है। आखिर में यजमान को कहा जाता है—अवभृत स्नान यह अखिरी कार्यक्रम है। वास्तव में अवभृत स्नान यह कोई यज्ञ का अग नहीं है। यज्ञ का कार्यक्रम तो पूरा हो गया है। ठीक ढंग से सम्पन्न हुआ है। लेकिन वह ठीक ढंग से सम्पन्न हुआ, यह सिग्निफाई करने के लिए केवल अवभृत स्नान शेष रहता है। मुझे लगता है कि केवल एक फार्मलिटी के नाते इस समारोप के कार्यक्रम को रखा गया है। वैसे इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि सभी बातें बिल्कुल उचित ढंग से सम्पन्न हुई हैं। और इस सम्पन्न हुए उचित कार्यवाही के लिए मैं आप सब लोगों का अभिनन्दन करता हूं।

अभी आखिर-आखिरी में मेरे बारे में भी कुछ कहा गया। जैसे तुकाराम ने कहा है कि मेरे गुण अवगुण क्या हैं, मैं जानता हूं। अंग्रेजी में एक शब्द है "रिफ्लेक्टेड ग्लोरी'। रिफ्लेक्टेड ग्लोरी का मतलब क्या है? आमतौर पर आदमी यही समझता है कि रात में चन्द्रमा ऊपर आता है और यह चन्द्रमा की रोशनी है। वास्तव में आप जानते ही हैं कि चन्द्रमा प्रकाशयुक्त नहीं है। चन्द्रमा का अपना कोई प्रकाश नहीं होता। सूरज का प्रकाश है। सूरज के प्रकाश का रिफ्लेक्शन चन्द्रमा में होता है। लोगों को लगता है कि चन्द्रमा प्रकाश दे रहा है। वास्तव में चन्द्रमा में प्रकाश नहीं है, इसी को रिफ्लेक्टेड ग्लोरी कहते हैं। प्रकाशयुक्त सूरज है। चन्द्रमा के पास प्रकाश नहीं, लेकिन जब सूरज का प्रकाश चन्द्रमा पर आता है तो जैसे दर्पण में, आईने में रिफ्लेक्शन होता है—प्रकाश का। वैसे ही चन्द्रमा से प्रकाश का रिफ्लेक्शन होता

है । आम दुनिया सोचती है कि चन्द्रमा प्रकाशयुक्त है और लोग यह भी कहते हैं कि सूरज तो बड़ा तकलीफ देने वाला है, इससे चन्द्रमा की रोशनी अच्छी है । चन्द्रमा का प्रकाश बड़ा शान्त व शीतल है। इस प्रकार ज्यादा क्रेडिट चन्द्रमा को मिलता है । जबकि प्रकाश उसका नहीं है । हम लोग यहां बैठे हैं, अभी हमारे विश्वास दा कह रहे थे कि कल रात को एक बड़ा पावरफुल बल्ब यहां लगा था । उस पर हमने सोचा इस बल्व में पॉवर है क्या ? आप जरा इसका कनेक्शन पावर हाऊस के साथ से हटा दीजिए। बल्ब यही रहेगा, सारी रचना यही रहेगी, लेकिन यदि पावर हाऊस के साथ इसका कनेक्शन टूट जाता है तो यही बल्ब प्रकाश नहीं दे सकता । स्पष्ट है कि प्रकाश इस बल्ब का नहीं है, पावर हाऊस का प्रकाश है । पावर हाऊस के साथ ठीक ढंग से कनेक्टेड है, इसलिए यह बल्ब प्रकाश दे रहा है । इसका अपना प्रकाश नहीं है ।

संत तुकाराम ने कहा कि जो माल बेचने के लिए मैंने अपनी दुकान में रखा है, यह माल मेरा पैदा किया हुआ नहीं है, मेरा माल नहीं है । माल माल वाले का है । मालिक का माल है । उसके भण्डार में, उसके स्टोर हाऊस में यह रखा था, लेकिन यह सारा माल जिस मालिक का है, वह तो जनता के सामने नहीं है । जनता के सामने यह छोटा दुकानदार है, जो वहां से माल उठाकर लाता है और अपनी दुकान में रखता है । लोग सोचते हैं कि यह सारा माल छोटे दुकानदार का ही है । मैं समझता हूं कि मुझे इसी ढंग से क्रेडिट मिल रहा है । क्रेडिट मिलता है तो हम ले लेंगे । कौन छोड़ेगा ? मेरे विषय में मिस अन्डर-स्टेण्डिग होने के कारण यदि बी० एम० एस० का कुछ लाभ होता है तो मिस अन्डरस्टेण्डिग रहे तो भी कोई आपत्ति नहीं है । हम सब जानते हैं कि भारतीय मजदूर संघ किसी व्यक्ति के कारण या किसी व्यक्ति के आधार पर नहीं चल रहा है । देश की अस्मिता, उस अस्मिता की इच्छा के कारण, राष्ट्रशक्ति की इच्छा के कारण, एक ऐतिहासिक आवश्यकता होने के नाते राष्ट्र में और मज-दूरों में जो स्वाभाविक प्रेरणा थी, उसके ही विस्तारित रूप में भारतीय मजदूर संघ का निर्माण हुआ है और चल रहा है । मैं यदि सोचूं कि मेरे कारण या किसी व्यक्ति के कारण यह चल रहा है तो यह वैसा ही होगा जैसे किसी पक्षी के बारे में कहा जाता है कि वह पेड़ की शाखा पर ऊपर टांग करते हुए यह सोचकर सोता है कि यह महान आकाश मेरे पैरों के कारण नीचे नहीं आ सकेगा, मैं यदि पैर नीचे कर दूं तो आकाश गिर जायेगा। इस तरह की गलतफहमी जैसे उसकी होती है, वैसे ही हमारे बारे में है यह मैं अच्छी तरह से जानता हूं ।

भारतीय मजदूर संघ की एक ऐतिहासिक आवश्यकता जरूर थी और पहले से ही इसका विचार लोगों के मन में था । पिछली शताब्दी के अन्तिम दशक में

अमेरिका से अखण्डानन्द को पत्र लिखते समय एक वाक्य विवेकानन्द ने लिखा था कि "अब तक हमारे देश में ऐसा कहा गया था कि—"मातृदेवो भव" "पितृ-देवो भव" "आचार्य देवो भव", किन्तु इसमें और कुछ जोड़ने की आवश्यकता है "और दो बातें जोड़ देने का उन्होंने सुझाव दिया। "दरिद्र देवो भव" व "मूर्ख देवो भव" जोड़ देने की उनकी इच्छा थी। उसी इच्छा की पूर्ति के लिए सगुण साकार रूप में भारतीय मजदूर संघ का निर्माण हुआ है। 1920 में इण्डियन नेशनल कांग्रेस का अधिवेशन नागपुर मे हुआ था। स्वागत समिति में प० पू० डा० हेडगेवार भी थे। कांग्रेस का ध्येय क्या रहे इसके विषय में एक प्रस्ताव स्वागत समिति के माध्यम से आना चाहिए और कांग्रेस के ध्येय के रूप में उसको स्वीकार करना चाहिए इस प्रकार का प्रबल प्रयास पूज्य डाक्टर जी ने किया था। उन्होंने कांग्रेस का क्या ध्येय होना चाहिए इस विषय में दो बातों को रखने का आग्रह किया। प्रथम देश का सम्पूर्ण स्वराज्य और दूसरा विश्व के सभी देशों को पूँजीवाद के चगुल से मुक्त करना। पहला उद्देश्य सम्पूर्ण स्वराज्य को स्वीकार करने में कांग्रेस ने नौ साल लगाये। और दूसरा उद्देश्य स्वीकार करने का विचार अभी भी काग्रेस के मन में नहीं है। क्योंकि स्वयं वह भी फारेन कैपिटल के दबाव में आ गयी है। वैसे तो पूज्य डाक्टर जी की कई इच्छाएं अतृप्त रहीं, किन्तु उनमें से यह एक अतृप्त इच्छा थी कि विश्व के सभी देशों को पूँजीवादी के चंगुल से मुक्त करना—उसकी पूर्ति के लिए यह प्रयास चल रहा है। भारतीय मजदूर संघ की स्थापना—कोई बड़ी ओरिजिनल बात नहीं है। इसमें कोई ओरिजिनलिटी स्वयं प्रतिमक्त नही है। पुराने जमाने से इस राष्ट्र की अस्मिता की दृष्टि से जो बातें चली आई है, उसके ही एक आवि-ष्कार के रूप में भारतीय मजदूर संघ उपस्थित है। इसी दृष्टि से हम भारतीय मजदूर संघ को देखते हैं।

बी० एम० एस० के विषय में हम लोगों के मन में कोई संस्थागत अहंकार नही है। संस्थागत स्वार्थ नहीं है। कोई संस्थागत विचार नहीं है। हम केवल इसको राष्ट्र और गरीब लोगों की सेवा का माध्यम व साधन के नाते देखते हैं। इसी नाते बी०एम०एस० का हम काम कर रहे हैं। संस्थायें आती हैं, जाती हैं, नेता आते हैं, जाते हैं, पार्टियां आती हैं, जाती हैं—लेकिन राष्ट्र हमेशा रहने वाला है। उसी के एक साधन के रूप में बी० एम० एस० को हम मानते हैं। साथ ही साथ एक अच्छे साधन के रूप में उसे समझते हैं। इस साधन के उपयोग करने की क्षमता हम लोगों में आ जाए, उस दृष्टि से मारल स्टेट्स, नैतिक ऊंचाई, गुणवत्ता, ध्येयनिष्ठा बढ़ाने का प्रयास भी हमारा हरेक कार्यकर्ता कर रहा है। क्योंकि साधन अच्छा होने पर भी वह किस हाथ में है, इस पर अवलंबित रहता है। भगवान कृष्ण की भी बासुरी आपके व हमारे जैसे लोगों के हाथ में आ जावे

तो भी उसके बजाने से जनता नजदीक आने के बजाय और दूर भाग जाएगी। जैसे भवानी तलवार शिवाजी के हाथ में रहेगी तो वह अलग ढंग से काम करेगी, किन्तु वह हमारे हाथ में आ जाए तो शायद उससे दुश्मन का तो सिर कटेगा नहीं, उस तलवार को हम अपने ही पैर पर मार लेंगे। साधन भी अच्छा हो और साधन का ठीक ढंग से उपयोग करने की दृष्टि से आवश्यक शक्ति, क्षमता व स्टेट्स भी हर एक कार्यकर्ता का हो, इसके लिए हम लोग प्रयास कर रहे हैं।

हमारे सामने एक श्रेष्ठ आदर्श है, जिससे प्रेरणा प्राप्त करते हुए हम आज की इस विषम परिस्थिति में भी अपनी ध्येयनिष्ठा कायम रख सकते है। ध्येय क्या है आप सब जानते ही हैं। हमने कोई नया ध्येय देश के सामने नहीं दिया है। जो पाश्चात्य विद्याविभूषित है, उनको लगता है कि बी० एम० एम० ने कोई नई बात दी है। यहां तक कि कुछ कम्युनिस्ट पेपर्स ने भी कहा कि ये लेबराईजेशन, श्रमिकीकरण आदि की एक नई बात बी० एम० एस० ने दी है। वास्तव में बी० एम० एस० ने कोई नई बात नहीं दी है। जो हमारी प्राचीन परम्परा में था, वही उठाया है। हमारे पास प्रोपेगण्डा के कोई साधन नहीं हैं, न हम पब्लिसिटी का कोई प्रयास करते हैं। तो भी अन्य लोगों के इतने मजबूत किले पहले से खड़े थे और हमारे पास कुछ नहीं था "रावण रथी विरथ रघुराई" जैसी बी० एम० एस० की स्थिति थी, तो भी काम बढ़ा। इसका प्रमुख कारण यह था कि हमारी भाषा व भावनाओं को इस देश के लोग समझते हैं। कम्युनिज्म व सोशलिज्म की बात समझने में उनको देर लगती है। वह समझ में आना भी कठिन है। लोगों के दिल दिमाग में जो बातें पहले से ही संस्कार के रूप में है, उन हमारी बातों को लोग समझते ही हैं। हमारे साधन विहीन होने पर भी लोगों ने बी० एम० एस० को समझ लिया। मुझे स्मरण होता है पंजाब में जब पहले पहल काम प्रारम्भ हुआ, कम्युनिस्टों का बहुत जोर था, यहां तक कि गांव में भी कम्युनिस्ट फैले थे और उस समय सरदार सुखनन्दनसिंह हमारे जनरल सेक्रेटरी थे—पंजाब के। कम्युनिस्टों के साथ बड़े उनके डिस्कशन्स होते थे, उनको डिस्कशन्स करने का शौक भी था। कम्युनिस्ट कहते थे, ये जो आप सारा कह रहे हैं—भारतीय संस्कृति, भारतीय परम्परा आदि ये सब दकियानूसी बातें हैं। क्या है आपके पास कार्यक्रम? कहां आर्थिक कार्यक्रम है? तरण तारण की बात है, सुखनन्दन सिंह ने कहा कि चलिए जरा प्रार्थना आदि होती होगी गुरुद्वारा में, वहां जाकर जो वहां के श्रेष्ठ हैं, उनके साथ चर्चा करेंगे। हमारे पास तो कई बातें हैं। डियरनेस अलाउन्सेस, बोनस, नीडबेस्ट मिनीमम वेज। वहां के जो श्रेष्ठ हैं—गुरुद्वारा के, उनसे भी पूछेंगे कि आपके पास कुछ है? आपके ग्रन्थ में कुछ है? नीडबेस्ट मिनीमम वेज आदि के बारे में क्या है? सुबह का वायुमण्डल था, बड़ा शान्त। "बचन बसे जी लागे गुरुदा, बचन बसे जी

लागे" यह भजन चल रहा था। उस कम्युनिस्ट पर भी उसका असर हुआ। आखिर रक्त तो इधर का ही है, भले ही सिद्धान्त उधर का हो। भजन समाप्त होने के बाद हम लोग अन्दर गए। हमारे कम्युनिस्ट भाई ने एकदम आवेश में आकर पूछा कि महाराज ये सब बातें चल रही हैं, लेकिन यह बताइए कि आपका एकनामिक प्रोग्राम क्या है ? वह बेचारे हक्का-बक्का रह गए। उन्हें पता ही नहीं कि एकनामिक प्रोग्राम क्या होता है। उन्होंने कहा "नहीं-नहीं हमारे पास कुछ नहीं है।" श्रेष्ठ ने आगे कहा "भई, हम इतना नहीं जानते। हमको तो इतना बताया गया है कि "कृत कर, वण्डचख, नाम जप" काम करो, बाट कर खाओ, भगवान का नाम लो। प्रोड्यूस, डिस्ट्रीब्यूट, प्रे—बस इतना जानते हैं, ज्यादा नहीं जानते। हम डियरनेस नहीं जानते। अलाउन्स नहीं जानते। बोनस नहीं जानते।" इस पर कम्युनिस्ट भाई कुछ बोलने वाले थे, किन्तु हमने उनसे कहा कि "तुम जितनी बातें कह रहे हो वह सारी बातें इसमें आ गई है। बोलने के पहले जरा सोचो और तुम्हारी बातों से भी और ज्यादा बातें इसमें आ गई है।" हमारा वह कम्युनिस्ट भाई जरा निराश हो गया।

हम जो भाषा बोल रहे है, वह इस भूमि की भाषा है और इसके कारण हमारा ध्येय क्या है—यह समझाने में कोई बहुत कठिनाई नहीं है। और ऐसे ध्येय को लेकर काम करने वाले कार्यकर्ता, हम सब हैं ही, जो यहां बैठे हैं। यहां बैठे हुए सभी लोग इस तरह के ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ता तो हैं ही, लेकिन यह बड़ा काम है, इसके लिए अधिक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। किन्तु चूंकि हमारे विचार, हमारे सिद्धान्त, हमारे आदर्श इस भूमि की उपज हैं और हमें नये-नये कार्यकर्ता खड़े करना है, उनको अपने साथ कन्धे से कन्धा लगाकर खड़ा करना है। ध्येय ऐसा है, जो इस भूमि में से पैदा हुआ है और आप सब ऐसे हैं जो ध्येयनिष्ठ हैं, कर्तव्यनिष्ठ हैं बेचे जाने वाले नहीं हैं। खरीदे जाने वाले नहीं हैं। छोटे-छोटे प्रलोभन में आने वाले नहीं हैं।

जिस समय समुद्र मन्थन चल रहा था, उस समय समुद्र मन्थन बन्द होना चाहिए, इस दृष्टि से कुछ प्रलोभन दिखाये गये। "रत्नैर्महीर्हे. स्तुतुषेर्न देवा:" अर्थात् समुद्र ने देवताओं को पहले रत्न दे दिए, इसलिए कि रत्न के ही चक्कर में आकर वे समुद्र मन्थन का काम अर्थात् अमृत निकालने का जो काम था, ध्येय का, वह ध्येय भूल जायेंगे। रत्नों में ही ये खो जायेंगे। प्राचीन काल में ऋषि मुनि तपश्चर्या करते थे। तपश्चर्या मोक्ष के लिए होती थी। वास्तव में उनका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं रहता था। तो भी जो राजनैतिक नेता और शासक रहते हैं, उनके मन में हमेशा इच्छा रहती है कि देश में कोई भी आल्टरनेट पॉवर नहीं बनना चाहिए। वैकल्पिक शक्ति केन्द्र नहीं बनना चाहिए।

हमारा जो ध्येय है, ईश्वरीय कार्य है। और जहां ईश्वरीय कार्य है, वहां स्वय भगवान सहायता करने के लिए दौड़ कर आते हैं। मुझे स्मरण है, हमने यह बात कही थी कि जिस समय बी० एम० एस० प्रारम्भ हुआ, संख्या कुछ भी नहीं थी। छोटी-छोटी यूनियन्स थीं। नया दुकानदार जब काम करता है तो वह कोई बड़ी फैक्ट्री थोड़े ही खोल सकता है। उसके पास इतना कैपिटल कहां है? वह चाय की दुकान खोलता है, या पान-बीड़ी का ठेला लगाता है। हमारे पास रिक्शा की यूनियन, दुकान कर्मचारी—ऐसी छोटी-छोटी यूनियन्स थीं और संख्या अत्यन्त नगण्य थी। हम कहते हैं कि कितनी है तुम्हारी संख्या। बोले, साहब, उन्चास हैं। हम कहते थे और एक प्लस वन डालो। तब वे कार्यकर्ता पूछते थे ये प्लस वन क्या है? उस समय हमने इसका विश्लेषण किया था।

मेरा अपना अहं नहीं, न व्यक्तिगत अहंकार है, न दलगत अहंकार है, न समूहगत अहंकार है। जो ध्येय के प्रति सम्पूर्ण, सब रूप से समर्पित हैं, उसका समर्थन करने के लिए ही एक महान शक्ति दौड़कर आती है। इसका एक अच्छा उदाहरण है, जिस समय मुहम्मद साहब को मक्का छोड़ना पड़ा, मदीना जाने के मार्ग में उनका पीछा लोग करने लगे। अबूबकर उनके साथ थे, जब पीछा करने वाले नजदीक आ गए तो दोनों ने एक गुफा में आश्रय ले लिया। ये दो ही थे, उनको मारने के लिए आए हुए लोग बहुत बड़ी संख्या में थे। गुफा के दरवाजे के पास आने के बाद मारने वाले रुक गए। सामने उनको रास्ता दिखाई नहीं दिया। कहां गए? आगे का रास्ता कौनसा है? आपस में उनकी बातचीत चली। गुफा में मोहम्मद साहब को अबूबकर कहते हैं, 'मुझे बहुत बड़ी फिकर हो रही है। बोले क्यों?' कहा, 'हम दो हैं और दुश्मन इतनी बड़ी संख्या में हैं। यदि गलती से अन्दर आ जाते हैं तो हमको वे खतम कर देंगे। मुझे खतम हो जाने में कोई आपत्ति नहीं, लेकिन आप खतम हो जायेंगे तो अल्लाह का पैगाम कौन सुनाएगा?' मोहम्मद साहब ने कहा कि "भाई अल्लाह को अपना पैगाम यदि मेरे जरिये सुनाना है तो वह मुझे बचाएगा" अबूबकर पूछे 'वह कैसे बचायेगा? संख्या उनकी बहुत बड़ी है और हम तो दो ही हैं।' उस समय मोहम्मद साहब ने कहा कि 'अबूबकर हम दो नहीं, हम तीन हैं।' अबूबकर मुंह खोल इधर-उधर देखकर कहने लगे, 'साहब, तीसरा तो कोई दिखाई नहीं देता। हम तो दो ही हैं।' उस समय मोहम्मद साहब ने कहा था कि 'देखो हम दो नहीं, हम तीन हैं और यह जो तीसरी हस्ती है, अपने सभी दुश्मनों की कुल मिलाकर जो ताकत है उससे भी अधिक ताकत रखने वाली वह हस्ती है। वह तुम्हारे-हमारे पीछे है।' यह आत्म विश्वास, विजय का विश्वास, सिद्धान्त के विजय का विश्वास, जब व्यक्ति का अहं नहीं रहता, मोह नहीं रहता, ध्येय के साथ व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से एकात्मक हो जाता है तो विश्वास भी जागृत होता है और उसके

मुताबिक भगवान भी उसकी सहायता के लिए आते हैं। जब तक यह विश्वास है, तब तक भगवान की सहायता अवश्य रहेगी। जहां-जहां सम्पूर्ण निरहंकार, ध्येयनिष्ठा है, वहां-वहां भगवान अवश्य सहायता करते हैं। अपने यहां कितने ही ऐसे उदाहरण हैं कि भगवान ने सहायता की। द्रौपदी वस्त्रहरण के बारे में कहते हैं कि जब द्रौपदी की चीर खिंची जा रही थी, इधर भगवान की प्रार्थना तो द्रौपदी अवश्य कर रही थी। लेकिन साथ ही साथ एक पल्ला भी पकड़ कर रखी थी। थोड़ा सा अहंकार उसके भीतर शेष रह गया था कि मैं अपनी लज्जा की रक्षा कर सकती हूं। भगवान हमेशा साथ हैं जैसे कि रामदास ने कहा है कि "हमेशा भगवान आपके साथ है, लेकिन आपके धारिष्ट की, आपके धैर्य की थोड़ी परीक्षा लेते हैं।" भगवान द्रौपदी के साथ ही थे, लेकिन उसके भीतर थोड़ा अहंकार बच गया था कि "मैं अपनी लज्जा की रक्षा कर सकती हूं," तब तक भगवान ने एक वस्त्र भी नहीं भेजा। और कहते हैं कि जब दुशासन का जोर बढ़ गया और वह अपने को विवश और असहाय महसूस करने लगी और जो एक पल्ला पकड़ लिया था वह भी हाथ से छूट गया। हाथ छूट गया अर्थात् अहंकार समाप्त हो गया 'अब तू करेगा वही होगा।' भगवान ने द्रौपदी की रक्षा का भार ले लिया। हम कुछ नहीं कर सकते—ऐसा लगता है, वहां भी भगवान सहायता करते हैं। यह ईश्वरीय कार्य है। अगर हम निरहंकारी होकर ईश्वरीय कार्य को आत्म समर्पित करते हैं तो कार्य सफल होगा। हमने एक बार एक प्रश्न किसी से पूछा था। हमने पूछा कि भगवान ने लोगों की सहायता की यह तो हमने सुना है, अर्जुन और भगवान की बहुत ही एकात्मता थी, लेकिन ऐसा भी कोई उदाहरण महाभारत में आता है क्या? सहायता करना अलग बात, लेकिन आपकी जो ड्यूटी है, आपका जो कर्तव्य है उसी का पालन भगवान कर रहे हैं -- हमने कहा हो सकता है। अर्जुन पूर्णरूपेण कृष्ण समर्पित थे। लड़ते-लड़ते भीष्म के खिलाफ ऐसा मौका आया कि नान प्लस्ड धनुष बाण हाथ से छूट गया। अर्जुन बैठ गए, चेहरे की रोशनी उसकी उड़ गई और मैं कुछ नहीं कर सकता, विवशता, असहायता, दिखाई देने लगी, उस समय एक मात्र घटना हुई। स्वयं सुदर्शन चक्र हाथ में लेकर भगवान भीष्म के रथ की ओर दौड़ पड़े। जहां सम्पूर्ण समर्पण है -- ईश्वरीय कार्य के प्रति वहां हमारी ताकत कुछ नहीं होती, तो भी स्वयं भगवान हमारी सहायता करते हैं। यह सम्पूर्ण विश्वास हमारे हर एक कार्यकर्ता के मन में रहना चाहिए। हम अकेले नहीं हैं और इसलिए हमारी छोटी यूनियन, टेलर यूनियन, रिक्शा यूनियन, शाप एम्पलाईज यूनियन को कहते थे, भाई, तुम्हारी संख्या फारटी नाईन नहीं है, प्लस वन भी लिखो। फिफटी लिखो, क्योंकि व्यास भगवान ही भारतीय मजदूर संघ के सर्व प्रथम सदस्य हैं। ध्येय प्राप्त करने के बारे में चिन्ता

करने की हमें आवश्यकता नहीं है।

आज भले ही दिखाई देता हो कि हिन्दुस्थान एक पिछड़ा हुआ राष्ट्र है, और अमेरिका, रूस ये सारे अग्रसर राष्ट्र हैं, किन्तु यह थोड़े ही दिन की बात है! जो विशुद्ध भौतिकतावादी देश हैं वे ज्यादा दिन तक पनप नहीं सकते। इस संसार में कई साम्राज्य आए और कई साम्राज्य चले गए, जो विशुद्ध भौतिकतावादी हैं, वे न स्वयं ज्यादा देर तक जिन्दा रह सकते हैं और न दुनिया का नेतृत्व ज्यादा देर तक कर सकते हैं। आज हमारे सामने उनका बड़ा ग्लेमर दिखाई देता है। अमेरिकन स्टेट चले गए, रशिया स्टेट चला गया, दुनिया के इतिहास में इस तरह भौतिक क्षेत्र में संसार का नेतृत्व करने वाले कई राष्ट्र लुप्त हो गए। आज कहां बेबिलोनियां है? जब तक चांद सूरज है बेबिलोनियां का साम्राज्य चलेगा—बेबिलोनियां कहां है? खाल्डिया कहां है? असिरिया कहां है? पर्शिया कहां है? भरतुष्ट का व शाक्रटिस का ग्रीस कहां है? फारोवा राजाओं का मिस्र कहां है? किस हालत में है, जरा आज देखें। क्यों समझते हैं कि ये विशुद्ध भौतिकतावादी अमेरिका, रूस आदि हमेशा दुनिया का नेतृत्व करने वाले रहेंगे। एरनाल्ड टायनबी यह सुविख्यात जगत विख्यात शास्त्रज्ञ हैं, उन्होंने बताया कि हिन्दुस्तान का एक वर्ल्ड मिशन है। क्या वर्ल्ड मिशन है? उसने कहा भौतिकतावादी होने के कारण दुनिया चारों ओर बिखर गई है, विनाश के कगार पर आज मानवता खड़ी है, उस सम्पूर्ण विनाश से मानव के मानवता को बचाने की दृष्टि से भारत को ही काम करना है। जहां सम्पूर्ण मानवता विविध रूप से त्रस्त है, हर तरह के विभेद तथा अलग-अलग कारणों से विभेद की जहां हिन्दुस्तान में परिस्थिति है, वहीं इस प्राचीन देश की यह परम्परा रही है कि विभेद को विविधता के रूप में इसने देखा है, विविधता में एकात्मता का साक्षात्कार किया है। इस प्रकार की क्षमता केवल हिन्दुस्तान में है। दूसरी ओर विभेद से त्रस्त वेपन्स से सम्पन्न सुन्द और उपसुन्द आज दुनिया को नाश करने के लिए खड़े हो गए हैं! सुन्द, उपसुन्द से दुनिया को यदि बचाना है तो एक नया आदर्श दुनिया के सामने खड़ा करना होगा। विरोध व विभेद को, विविधता के रूप में देखने की क्षमता इसी देश की संस्कृति में है। इसी दृष्टि से भारत को ही संसार का नेतृत्व करना पड़ेगा। संसार को मार्गदर्शन करना पड़ेगा। ऐसी इसकी क्षमता है। आज हो सकता है कि हम पिछड़े हुए हैं। अमेरिका व रूस आज सामने होंगे, किन्तु क्या इन्होंने सदैव के लिए ठेका लिया है क्या? भगवान ने इनको ठेका दिया है क्या कि हमेशा दुनिया का नेतृत्व करोगे? हम नैतिकतावादी व राजनैतिक नेतृत्व का विचार नहीं कर रहे हैं, लेकिन मनुष्य को कैसे चलना चाहिए? सम्पूर्ण मानवता का कल्याण कैसे हो सकता है? सम्पूर्ण प्राणी मात्र का, मनुष्य का, मनुष्यन्तर प्राणी का कल्याण

कैसे हो सकता है ? कहा गया है कि

"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद्गजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।"

किस तरह से लोगों को व्यवहार करना चाहिए—इसकी शिक्षा-दीक्षा दुनिया के मानवों को भारत ही दे सकता है। आज हम गिरी हुई हालत में हैं तो भी इसके कारण निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है। राष्ट्रनिर्माण का कार्य शुरू हुआ है। भारतीय मजदूर संघ जहां अकेला, इनआईसोलेशन नहीं है। इस नवजागृत राष्ट्र की शक्ति, उसी की सेना, चारों ओर उस सेना का एक मोर्चा, एक विभाग यानी भारतीय मजदूर संघ और यह जो नवजागृत भारत की शक्ति है, यह शक्ति हर क्षेत्र में बढ़े। जो वैचारिक आइडियालॉजिकल आक्रमण चल रहा था, उसका मुकाबला आज हम कर रहे हैं। हम लोगों के प्रयास से परि-स्थिति बदलने वाली है, हम नक्शा बदलने वाले हैं। चतुरगण कहते हैं कि जिधर से हवा बहती है, उधर पीठ करो। परिस्थिति के साथ समझौता करो, ऐसे हम व्यवहार चतुर नहीं हैं। हम ऐसे पागल लोग हैं और हम कहते हैं कि अपने आदर्शों के मुताबिक दुनिया को हम बदलने वाले हैं। हम दुनिया के मुताबिक खुद को बदलने वाले नहीं हैं, ऐसे आदर्शवान, निष्ठावान, आत्मसमर्पित कार्य-कर्ताओं का परिवार यानी यह भारतीय मजदूर संघ। हिन्दुस्तान की राष्ट्रशक्ति व राष्ट्रीय अस्मिता को भारतीय मजदूर संघ यह आश्वासन दे सकता है कि हिन्दुस्तान को फिर से राजनैतिक, फिजिकल, भौतिक दृष्टि से, सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व सम्पादन करने की दृष्टि से, आगे बढ़ाने के लिए जो भी शक्ति आवश्यक है, उस शक्ति का जितना हिस्सा औद्योगिक क्षेत्र से आप अपेक्षा कर रहे हैं, वह सारी शक्ति इकट्ठा करते हुए हम इस राष्ट्र पुरुष के चरण पर समर्पण करने वाले हैं। भारतीय मजदूर संघ आज हिन्दुस्तान की राष्ट्रशक्ति को यह आश्वासन देता है। हम यहां से अपने-अपने स्थान पर जायेंगे, इसी ध्येयनिष्ठा को लेकर हमें जो छोटा-बड़ा काम मिला है, हम करते रहें। आज चारों ओर निराशा का वायुमण्डल दिखाई देता होगा, अपने ही प्रयास के कारण यह सारा बदलने वाला है। इस निश्चय के साथ हम यहां से जायेंगे। जब अगले अधिवेशन में आयेंगे तब परिस्थिति में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है—ऐसा हम देख सकें। यह आशा करते हुए आप सबको मंगल कामना प्रकट करता हूं।

झण्डा अपने देश का

झण्डा अपने देश का, श्रमिकों का मजदूरों का।
भगवा ध्वज अपनाया है तो, मोह कहाँ इन प्राणों का ।। धृ ।।

नील गगन में भगवा ध्वज यह, सदियों से ही लहराता है ।
अंधियारे को दूर भगाता, जीवन ज्योति जगाता है।
जन मानस में त्याग तपस्या भाव जगे बलिदानों का ।। 1 ।।

औद्योगिक क्रान्ति प्रतीक यह चक्र सुदर्शन समान है।
गेहूं की बाली हर किसान का समृद्धि वरदान है।
मुठ्ठी में सामर्थ्य अंगूठा प्रतीक यह अरमानों का ।। 2 ।।

औद्योगिकरण भारत का हो, उद्योगों का श्रमिकिकरण।
श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण हो, राष्ट्र का औद्योगिकरण।
बढ़ते जाये चरण सदा ही कारवां चले दिवानों का ।। 3 ।।

जेन्यूइन ट्रेड यूनियनिज्म के आधार पर भारतीय मजदूर संघ अकेला चल रहा है, शेष श्रम संगठन पोलिटि[illegible] यूनियनिज्म का प्रतिपादन करते [illegible]

भारतीय मजदूर संघ मजदूरों को राष्ट्र के अन्य घटकों से अलग नहीं मानता। राष्ट्र और गरीब लोगों की सेवा के माध्यम व साधन के रूप में उसकी [illegible]

भारतीय मजदूर स[illegible] किया है कि मजदूरों को आबाद करना और कार्यकर्ताओं को बरबाद करना उसका उद्देश्य है।

शक्ति का मापदण्ड संख्या नहीं, अपितु ध्येयनिष्ठा है।

ध्येयनिष्ठ अर्थात् कठोर जीवन व्यतीत करने वाला, सबके साथ मिलने के लिए तैयार, लोगों के दुःख-दर्द [illegible] वाला।

अहं नहीं, व्यक्तिगत घमंड नहीं, दलगत व समूहगत अहंकार नहीं, अपितु ध्येय के प्रति सम्पूर्ण समर्पण करने वाले कार्यकर्ता ही भारतीय मजदूर संघ की [illegible]

[illegible]

भारतीय मजदूर संघ 2426/27 तिलक गली, चूना मण्डी, पहाड़गंज नई दिल्ली-110055 द्वा[illegible] [illegible] नवीन शाहदरा दिल्ली-110032 में मुद्रि[illegible]